ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 84-85**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

आधुनिकता–बोध की दृष्टि से हरिकृष्ण कौल की कहानियाँ

रुकसाना सादिक
शोध अध्येत्री– हिन्दी विभाग, कश्मीर विश्विद्यालय, श्रीनगर (जम्मू & करश्मीर), भारत

Received-26.01.2026, Revised-04.02.2026, Accepted-11.02.2026 **E-mail: sadiqrozy0@gmail.com**

सारांशः आधुनिकता अर्थ एवं परिभाषा– युग कोई भी रहा हो, क्षेत्र कोई भी रहा हो, मानव ने कदाचित कभी भी विकास की दौड़ में पीछे रहना पसंद नहीं किया होगा। वह हमेशा आधुनिक कहलाना चाहता है। मनुष्य की विकास यात्रा का प्रत्येक पड़ाव उसके लिए नवीन होने के कारण अपने आप में आधुनिक है।

आधुनिकता क्या है? इसपर विचार करना बहुत आवश्यक है, आधुनिकता जिस मॉडर्निटी शब्द का हिंदी रूपांतरण है। वह अंग्रेज़ी के 'मोडो' शब्द से आया है, इसका अर्थ है हाल–फ़िलहाल, अभी का, आज, इस समय का, समकालीन। "लैटिन में इस शब्द का अर्थ था–इस काल में, किन्तु धीरे–धीरे अंग्रेजी में इस शब्द का प्रयोग कुछ अलग अर्थ में होने लगा और इसका अभिप्राय हो गया–सामाजिक संरचना एवं मूल्यों में परिवर्तन या फिर नए मूल्यों एवं नई सोच का जन्म।"[1] आधुनिकतावाद का जन्म विश्वयुद्ध के अंत में उत्पन्न नवीन संवेदना और नयी चिंतन दृष्टि के साथ हुआ। आधुनिकतावाद में आत्मबोध , वैयक्तिवाद और आत्मपरकता का भाव प्रमुख है आधुनिक साहित्य के मूल में मनुष्य है जो विडम्बना ,विसंगति इत्यादि के कारण अकेलेपन, अजनबीपन, इत्यादि को ही अपनी नियति मानकर समाज में घुटता–तड़पता एवं संघर्षरत जीवन जीने को अभिशप्त है। डॉ. विनयकुमार पाठक के अनुसार–"आधुनिक का शाब्दिक अर्थ 'आजकल या वर्तमान है, जो पूर्व में घटित न हुआ हो और अब नये ढंग से अवतीर्ण हुआ है।"[2]

कुंजीभूत शब्द– आधुनिकता–बोध, मानव, आधुनिक, मनुष्य की विकास यात्रा, मोडो, सामाजिक संरचना, मूल्य, नई सोच, अजनबीपन।

हिंदी में भी अधुनिक्ताबोध का प्रतिफलन कई रूपों में हुआ। कविताओं, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों, में खंडित व्यक्तित्व, अजनबियत, व्यक्ति–स्वतंत्र्य, उन्मुक्त सेक्स को लेकर बहुत कुछ लिखा गया। आधुनिकता बोध के फलस्वरूप ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का खंडन साहित्य में वर्णित हुआ, जिसके कारण छोटी घटनाएँ, प्रसंग, क्षण इत्यादि महत्वपूर्ण हो उठे। आज कथा साहित्य में आधुनिकता को लेकर नित–नये प्रयोग किये जा रहे हैं। समस्त कथा–साहित्य में उसकी हर विद्या में परिवर्तन देखने को मिलता है।

नयी कविता के माध्यम से कहानियों में आधुनिकता आई और आधुनिकता की दृष्टि से कहानियों का परम्परागत ढांचा टूटा और इनमे परिवर्तन आया। लेखक अपने अनुभव और भोगे हुए यथार्थ को विवश है। शाश्वत रूप से नवीनता और संबंधों की तलाश देखी जा सकती है। कहानीकार हरिकृष्ण कौल की कहानियों में आधुनिकता के स्वर परस्पर देखने को मिलते हैं। उनकी कहानियाँ नब्बे के दौर के बदलते युग बोध को अपनी कहानियों में दर्शाया है।

'इस हमाम में' कहानी की गहराई में पी. डव्लयू. डी के दफ्तर में रिश्वतखोरी के वातावरण का नग्न चित्रण है। कथानक मैट्रिक पास है, डिस्पेचर है पर मोहल्ले में अटैच ओवरसियर के रूप में रह रहा है। इंजीनियर साहब ने अनंतनाग डिविज़न से अपना एक विशेष आदमी श्रीनगर डिवीज़न में लाया है, जो कथानक के मोहल्ले में रहने लगा है। कथानक को पोल खुल जाने की चिंता है। कथानक को साहब के विशेष आदमी के पास हेडक्लर्क भेजता है, कि उसे दफ्तर आने के लिए कह दो परन्तु वह विशेष आदमी कथानक को पांच–पांच के दो नोट देता है, जिसके पश्चात कथानक दिन भर सिगरेट–सिनेमा देखता है। दूसरे दिन जब कथानक देर से दफ्तर पहुंचता है तो देखता है, के साहब के विशेष आदमी से नाराज़ हेडकर्ल्क सहित सब खुश हैं, क्योंकि उन सबको विशेष आदमी ने ठेकेदारों से मिले चाय–पानी में से यथा–शक्ति और यथा–योग्य दिया होता है।

कहानी के अंत में कथानक को हेडक्लर्क के कहे इस वाक्य :

तुम अभी छोटे हो ऐसे काम नहीं चलेगा। क्लर्क बनना है काम सीखना पड़ेगा, मेहनत करनी पड़ेगी.....[3]

से आधुनिकता का बोध स्पष्ट उजागर होने लगता है। इसी तरह **'दाव'** कहानी का कथानायक अपने मित्र से झूठ कहता है की उसके पास उसे चाय पिलाने के लिए पैसे नहीं, जबकि कथानायक घर से सिनेमा देखने के लिए निकला था। कथानायक को मित्र की भूख का एहसास है पर झूठ बोलता है यह कहानी आर्थिक स्थिति पर प्रश्नचिहन लगाकर आधुनिकता बोध करवाती है। इसी तरह **'विश्वास'** कहानी के कथानायक का डॉक्टर मित्र केवल अपना उल्लू सीधा करवाना चाहता है और कथानायक के बार–बार थोड़ी सहायता करने की बात पर ध्यान नहीं देता ।

'यक्ष और टोपी' कहानी में मध्यवर्गीय लोग किस तरह अपने और अपने परिवार की किसी कमजोरी को दूसरों के समक्ष प्रकट नहीं होने देते। हृदयनाथ अपने चाचा की इस कारण से दिन–रात गुलामी करता है कि कहीं उसकी पत्नी के आगे यह बात न खुल की उसकी शादी के ऐन मौके पर जब सुनार ने कंगन और कंठी उधार देने से इंकार किया था, तब चाचा ने छह सौ रुपये देकर उसकी नाक कटने से बचा ली थी। **'बंधन'** कहानी का नायक अपनी ज़िन्दगी बनाने के लिए घर से दो–सौ मील दूर एक घाटी में अपनी प्रेमिका के बंधन और पौने दो सौ रूपये की नौकरी छोड़ कर वापस आने को तैयार नहीं होता है, वह यह सोचने से नहीं झिझकता :

'उसे विजी से अधिक अपना जीवन प्रिय है, अपना भविष्य प्रिय है'....4

कहानी की गहरायी में अस्तित्ववाद का स्वर मौजूद है। कथानायक मनोहर अपनी प्रेमिका से स्पष्ट कह देता है कि मैं इस दूर दराज़ इलाके में रह कर अपनी ज़िन्दगी तबाह नहीं कर सकता उसका यह कथन–'मैं यहाँ से चला जाऊंगा' इस बात को स्पष्ट करता है। पीढ़ियों के अंतर से उत्पन्न अलगाव और बेकारी की समस्या से उत्पन्न तनाव ने किस प्रकार बेटे को बाप काट कर उससे नफरत करने पर उतारा है इस विषय को **'कर्फ्यू'** कहानी में लिया गया है बेटा पिता की उपस्थिति, बात–चीत तक को भी सहन नहीं करता है पिता से उसे कोई सहानुभूति नहीं। नगर में लागू कर्फ्यू के कारण पुत्र पिता को बहुत निकट से देखना पर चिढ़ उठता है और चाहता है कि उठकर सड़कों पर चीखकर, नारेबाज़ी करके, सिपाहियों पर पत्थर फेंककर कर्फ्यू भंग करे।

स्वार्थ व्यक्ति को किस प्रकार अमानवीय बनाकर कोई भी कुकृत्य करने को प्रेरित करता है इस विषय को **'भ्रातृघाती'** कहानी में लिया गया है, जहां एक भाई अपने भाई के होने से उसके अस्तित्व से अपने न उभर सकने की बात पर असका गला दबोच लेता

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- I, Issues-39, YEAR- Jan.-March 2026

है। दो युवा दिल ठन्डे होने पर बिछड़ने पर किस प्रकार अपनी अलग–अलग दिशाएँ चुनकर चलने लगते हैं और संयोगवश जब अचानक मिलते हैं, तो कितने बदल जाते हैं। यह **'अंधे'** नामक कहानी में लेखक ने दिखाया है। **'अगले दिन'** नामक कहानी में गलत तथा सड़ी–गली स्कूली शिक्षा व्यवस्था का शिकार होते आम बच्चों का प्रतिनिधित्व करने वाले दो छात्रों को लिया गया है। अपने को कान्वेंट जैसे स्तरीय स्कूलों के छात्रों के रहन–सहन, शिक्षा–दीक्षा तथा खान–पान की तुलना में हीन समझना। मोलवी या पहाड़ी स्कूली मास्टर जी जो पढ़ाने के बजाय मात्र बेंत मारते हैं। घर में नौकर की छुट्टी हो जाने पर स्कूली छात्रों से घर का काम करवाते हैं। अगले दिन कहानी इस सब पर अपनी द्रष्टि डालती है **'टोकरी भर धूप'** कहानी भी वृधावस्था में परिवेश बदलने के कारण भुत परेशान है बड़ा बीटा आर्थिक रूप से नर्म है और उसकी पत्नी अपनी सास के घर पर उनके साथ रहने पर बहुत परेशान होती है, दूसरी तरफ दिल्ली मैं स्थित छोटे बेटे के परिवेश मैं स्वयं को ढाल नहीं पा रही। इसी कशमकश में बुढ़िया स्वयं को असहाय समझती है। ग्रामीण जीवन में रहन–सहन और घरों में लगने वाली ताश–मंडलियों के बीच एक आम नारी की लगातार मशीन की तरह काम करने की दिनचर्या में टूटन महसूस करती है, इसको **'गंदी बहार'** नामक कहानी में पदार्पण हुआ है।

निष्कर्ष– उपर्युक्त विवेच्य कहानियों की विषय भूमि का भ्रमण करने पर निश्चय से कहा जा सकता है कि हरिकृष्ण कौल का कहानी साहित्य आधुनिकता स्पष्ट रूप से झलकती दिखाई दे रही है। अपने समय का युग–बोध लेखक की कहानियों में पूर्ण रूप से उभर रहा है। बदलता हुआ परिवेश तथा आधुनिक होती हुई लोगों की सोच स्पष्ट दिखाई पड़ता है। कुल–मिलाकर हरिकृष्ण कौल की कहानियों में आधुनिकता का संकेत बड़ी मज़बूती से दिखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उत्तर–आधुनिकताः कुछ विचार, सं. देवशंकर नवीन, सुशांत कुमार मिश्र, पृष्ठ–53.
2. हिंदी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, डॉ. विनय कुमार पाठक, पृष्ठ–32.
3. इस हमाम में, प्रतिभा प्रकाशन, पृष्ठ–22.
4. बंधन, इस हमाम में, पृष्ठ–58.

*****